माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

कार्यालयीन उपयोग के लिए

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

परीक्षा के नाम की सील: हाई स्कूल परीक्षा

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 0 1 परीक्षा का विषय हिन्दी
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 05-03-09
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः लिखें। कोड I-1001 सेट C

2009 केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्र क्रमांक- 221006

2461053

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक K

4. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

1	9	2	2	1	7	8	0	4

5. नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंक उसी क्रम में शब्दों में लिखा

एक नौ दो दो ...

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में एक अंकों में 01

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 8A में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम सुशीलकुमार तिवेदी पद शिक्षक

पता/संस्था उ.उ.मा.वि. नौगांव

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं। - 01 -

5.3.09

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

B S E M P

प्रश्न	
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
कुल प्राप्त	

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 251025

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

प्र01 :- उत्तर

(I) ओज गुण

(II) महर्षि वेदव्यास

(III) कुन्ती

(IV) महाकाव्य

(V) दिन + ईश

उत्तर :- प्र02 :- (I) - (ख) सारस्वती

(II) - (ग) ज्ञान

(III) - (ख) शिक्षितों की

(IV) - (ख) कुम्हार

(V) - (क) कुण्डलियाँ

प्र03 :- उत्तर :-

(I) - सत्य

(II) - असत्य

BSEMP

योग

(III) – २

(IV) – असत्य

(V) – सत्य

प्र04:- उत्तर

(1) नर्मदा – (ख) अमरकंटक

(2) रात्रिकाल से चिरअभिशापित – (घ) चकवा - चकवी पक्षी

(3) तुर्की के राष्ट्रपति – (ङ) महान कमलपाशा

(4) बढ़ा - चढ़ाकर वर्णन करना – (क) अतिशयोक्ति

(5) प्रवास - सुवास – (ग) द्वन्द्व समास

प्र05:- उत्तर

(I) – सावन के महीने मे

(II) – यह कथन लेखक ने खेत मे खड़े व्यक्ति से कहा है।

(III) – गुंजो की माला

(IV) – संचारी भाव

(V) – द्विगु समास

प्र06 का उत्तर

तुलसीदास जी ने बालक राम के बालहठ का बड़ा ही स्वभाविक चित्रण किया

DSEM

है। इसमे थोड़ा भी बनावटी पन का मालूम नही पड़ता है। बच्चे सरल स्वभाव के होते है। परन्तु वे अपनी इच्छाओ को पूरा करके ही मानते है। जब श्री राम चन्द्रमा को लेने का हठ करते है। तो वे चुपकारने समझाने से नही मानते है। उनमे अपनी इच्छाओ के प्रति आग्रह होता है। वे जिस चीज की माँग करते है। उसे पूरा करके ही मानते है। वे जिस की भी माँग करते हैं उस पर अड़ जाते है। उनका यह बालोचित व्यवहार माता, पिता एवं अन्य सभी बहुत अच्छा लगता है। वे संभव - असंभव से परिचित नही होते है। यही कारण की अपनी परिछाई को देखकर डर जाते है। कभी ताली बजाकर, नाचने लगते है। तो कभी क्रोधित हो जाते है। इस प्रकार तुलसीदास जी बालहठ का बड़ा ही स्वभाविक चित्रण किया है। इसमे बिल्कुल भी बनावटी पन नही है। इस प्रकार सुरदास ने बाल स्वभाव का बड़ा ही सरस तथा प्रभावी वर्णन किया है।

प्र०५ का उत्तर

उद्बोधन कविता कवि रामधारी सिंह दिनकर की एक राष्ट्रीयता से ओत - प्रोत कविता है। इसमे कवि ने स्वतंत्रता जाति वाले लोगो

कवि रामधारी दिनकर के अनुसार जब अहं पर पड़ती है तो व्यक्ति उससे घबराते नही है बल्कि अपनी क्षमता का विस्तार कर पूरी शक्ति से उसके समाधान के उपाय खोजते है तथा उससे घबराते नही है तथा इससे उन व्यक्तियो के व्यक्तित्व का विकास होता है तथा वह संघर्षो से लड़ने के लिये उत्साहित होते होते है तथा उन समास्याओ के विचार-पूर्ण समाधान निकलकर अपने व्यक्तित्व का विकास करते है तथा उनमे इससे राष्ट्रीयता का भावना का समावेश होती है किसी प्रकार भाग्य के विधान से ही उनके अहं पर चोट पड़ती है वह स्वतंत्रता प्रेमी ही इस स्वतंत्र वातावरण मे कठिन परिस्थितियो का सामना करते हुये अपनी स्वतंत्रता को बनाये रखते है तथा तथा वे अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करते है।

प्र 08 का उत्तर

रीतिकाल की विशेषताएँ :- रीतिकाल की प्रमुख तीन विशेषताए निम्नलिखित है -

(1) श्रृंगारिकता :- श्रृंगार काल या रीतिकाल मे श्रृंगार रस की प्रधानता रही है इस

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

काल मे भक्ति, नीति के अनेक अच्छे कवि हुये। जिन्होंने रीतिकाल को चरम सीमा तक पहुचायों तथा श्रृंगार रस की प्रधानता के कारण ही इस काल को रीतिकाल कहा जाता है।

② वीर रस की प्रधानता :- रीतिकाल मे वीर रस के अनेक अच्छे कवि हुये है। जिन्होंने रीतिकाल के कारण अनेक रीतिग्रंथो की रचना की है। जैसे: भूषण रस वीररस के कवि ने अनेक रीतिग्रंथो की करने पर भी इसमे वीर रस का भाव झलकता रहा है।

③ चमत्कार प्रधान काव्य :- इस काल के कवियो ने चमत्कार प्रधान काव्यो की रचना की है। जिससे लोग बहुत बहुत प्रभावित हुये है। इस समय मुक्तक शैली का अधिक प्रयोग किया गया है। इस समय दोहा, चौपाई, पद, सवैया आदि बहुप्रयुक्त छन्दो की रचना की गयी।

रीतिकालीन कवियो के नाम तथा उनकी रचनाये निम्न है।

रीतिकालीन कवि	रचना
① बिहारी	बिहारी सतसई
② घनानन्द	पद्मावत

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

मतिराम — मतिराम सतसई
ठाकुर — ठाकुर ठसक
बोधा — विरह वारिश

प्र० 9 का उत्तर

रेखाचित्र और संस्मरण मे दो अंतर -
रेखाचित्र और संस्मरण मे कोई दो अंतर निम्नलिखित है -
रेखाचित्र एवं संस्मरण एक ही विधा के एक - दूसरे से मिलते रूप है। रेखाचित्र के भाँति ही संस्मरण मे भी किसी वस्तु या घटना का हु - बहु - चित्र आँखो के सामने आ जाता है। तथा रेखाचित्र विषय प्रधान तथा संस्मरण विषयी प्रधान होता है। तथा रेखाचित्र मे किसी भी घटना या वस्तु का चित्रण किया जाता है जबकि संस्मरण मे किसी प्रसिद्ध नायक या किसी प्रसिद्ध घटना का वर्णन किया जाता है तथा रेखाचित्र के विविध रूप हो सकते है। लेकिन संस्मरण किसी प्रसिद्ध व्यक्ति या वस्तु का होता है संस्मरण का विषय यथार्थ होता है। जबकि रेखाचित्र का विषय काल्पनिक होता है। तथा संस्मरण की तथ्य दृष्टि होना चाहिए तथा रेखाचित्र काल्पनिक भी हो सकता है।

BSEMP

9

योग + पृष्ठ = व

3

रेखाचित्र की एक विधा एवं उनके कवि

रचनाकार/कवि — विधि विधा

(1) बाबु गुलाबराय — औरंगजेब शीर्षक

संस्मरण की एकविधा — रचनाकार

भगिनी निवेदिता — एवाजिका आत्मरंजन

प्र० 10 का उत्तर

गाँव के आदमी बड़ा सुसंस्कृत व सरल होता है। वह छल, कपट व झूठ से कोसो दूर रहता है। तथा गाँव की प्रत्येक व्यक्ति ईमानदार होता है।

गाँव के सुसंस्कृत आदमी की चार विशेषताएँ निम्नलिखित है।

(1) गाँव का आदमी सुसंस्कृत होने के साथ-साथ विश्वास रखता है। वह इसके लिये सब-कुछ देने को तैयार रहता है।

(2) गाँव का आदमी धर्म के प्रति विनम्र होता है। तथा वे सत्यनिष्ठ होते है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

10

योग + पृष्ठ 10 के अंक = कुल अंक

(3) गाँव का आदमी सब कुछ सहन करता है परंतु अपनी ओर से कुछ नहीं कहता है।

(4) गाँव का आदमी सब कुछ सुनता है परन्तु किसी से कोई शिकायत नहीं करता है।

(5) गाँव का आदमी थककर कभी नहीं बैठता तथा वह झुकना नहीं जानता है।

इस प्रकार उपर्युक्त गाँव की मुख्य विशेषताएँ है।

प्र011 - का उत्तर

दीपक की आत्मकथा :- जिस प्रकार दीपक कठिन को सहकर अपने आपको सच्चा दीप सिद्ध कर देता है। उसी प्रकार हमें भी इससे यह शिक्षा मिलती है कि हमें कठिनाईयों से घबराना नही चाहिए बल्कि हमें इनका सामना करते हुऐ स्वयं को श्रेष्ठ नागरिक सिद्ध करना चाहिए। जिस प्रकार मिट्टी कूटकर

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

पीकर, पानी मे गलाकार पैरो से रोंधकर तथा कुम्हार उसे चाक की सहायता से दीप को बनाया जाता है फिर उसे अवा की आग मे पकाया जाता है इस प्रकार विभिन्न कष्टो को सहकर ही दीप से दीपक प्रकाश देने वाला बन जाता है तथा उसमे तेल व बत्ती डालकर जलाया जाता है जिससे प्रकाश को फैलाकर समाज की सेवा करता है इसी प्रकार हमे भी विभिन्न कठिनाईयो को सहकर दीपक की भाँति स्वयं को महान बनाना चाहिए तथा अपने देश व समाज का नाम रोशन करना चाहिए। तथा अपने कठिनाईयो से रुकना नही चाहिए बल्कि आगे-आगे ही बढते जाना चाहिए। तथा देश को चरम लक्ष्य तक पहुँचाना चाहिए। लेखक आज के नवयुवक को दीपक की भाँति समाज सेवा करना चाहिए। तथा समाज की सेवा करनी चाहिए तथा अपने व्यक्तित्व का चहुमुखी विकास करना चाहिए तथा अपने परिवार वालो का नाम रोशन करना चाहिए। तथा देश की सहायता करनी चाहिए।

अतः दीपक की तरह ही हमें सत्य, धैर्य, कठिनाईयो का सामना करना चाहिए।

B S E M P

पृष्ठ के अं.

12

योग पूर्व पृष्ठ   कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्र० 12 का उत्तर

(अ) मुक्तक काव्य :- मुक्तक काव्य मे प्रत्येक छन्द अपने आप मे पूर्ण रहता है तथा इसमे पूर्वा पर सम्बंध रहता है गीत का क्रम बदल देने पर भाव स्पष्ट करने मे कठिनाई नही आती है। तथा इसके अंतर्गत दोहा, पद, गीत आदि आते है। इसके प्रमुख कवि रहीम मीरा, सूरदास आदि है। इन सभी के गेय पद मुक्तक काव्य मे ही लिखे गये है।

(ब) उपर्युक्त पंक्तियो मे उल्लाला छन्द है।

उल्लाला छंद :- उल्लाला एक मात्रिक छन्द है। इसमे चार चरण होते है। इसमे प्रथम व तीसरे चरण मे 15-15 व दूसरे व चौथे चरण मे 13-13 मात्राएँ होती है। इस प्रकार कुल 15 व 13 की यति पर कुल 28 मात्राएँ होती है। तथा अन्त मे लघु, गुरु होता है।

प्र० 13 का उत्तर

उत्तर :- (अ) ——

(क) गौरव पुस्तक पढ़ता है (आज्ञावाचक)

उ० :- गौरव पुस्तक पढ़ो ।

(ख) तुम वाराणसी रहते हो । (प्रश्नवाचक)

उत्तर :- क्या तुम वाराणसी में रहते हो ?

(ब) ——

उत्तर :- (क) निषेधात्मक वाक्य

(ख) इच्छात्मक वाक्य

(स) ——

उत्तर (क) आस्तिक

(ख) अमर

प्र० 14 का उत्तर

प्रेमचन्द :- जन्म :- 31 जुलाई 1880

(क) रचनाएँ :- प्रेमचन्द जी ने उपन्यास, कहानी आदि के माध्यम से हिन्दी साहित्य का अपूर्व विकास किया है।

(1) कहानियाँ :- मानसरोवर तथा गुप्तधन में

BSEMP

आपकी तीन सौ से अधिक कहानियाँ है। पंच परमेश्वर, बूढ़ीकाकी, पूस की रात, परीक्षा आदि

उपन्यास :- वरदान, प्रतीज्ञा, गोदान, गबन कर्मभूमि

(ख) भाषा - शैली

भाषा :- प्रारम्भ मे प्रेमचन्द्र उर्दु मे लिखा करते थे। बाद मे उन्होंने हिन्दी क्षेत्र मे पदार्पण किया। इसलिए उनकी भाषा मे कुछ व्याकरण संबंधी दोष भी आ गये है तथा उन्होने हिन्दी मे एक नवीन परम्परा का भी गणेश किया। तथा उन्होंने उर्दु - शब्दावली से युक्त बोलचाल की एक सरल भाषा को अपनाया। तथा आपने संस्कृत प्रधान भाषा का प्रयोग भी किया है तथा मुहावरे तथा कहावतो के प्रयोग से आपकी भाषा मे चार चाँद लग गये है। हिन्दी पर आपका पूर्णाधिकार है।

शैली :- आपने संक्षेप मे परिचयात्मक, विवरणात्मक तथा भावात्मक, आलोचनात्मक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

आदि अनेक शैलियो का प्रयोग किया है।

साहित्य मे स्थान :- मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य मे उपन्यास के सम्राट तथा युग - प्रवर्तक कहानीकार होने के साथ साथ नये युग के कहानिकारो मे महत्वपूर्ण स्थान करते है। वे गरीबो के मसीहा थे। तथा उन्होने दीन दुखियो, महिलाओ, समाज के अन्य तिरस्कृत लोगो के प्रति कहानियाँ लिखी। आपके उपन्यास भारतीय जनप्रतिनिधि को महत्वपूर्ण न्याय प्रदान करते है। तथा प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य मे सदैव स्मरण किये जायेंगे।

प्र015 का उत्तर

तुलसीदास :- जन्म :- 1554 ई॰ (1497 सन्)
निधन :- 1680 ई॰ (1623 सन्)

रचनाएँ : तुलसीदास जी की अनेक रचनाएँ है।

① रामचरितमानस :- यह तुलसीदास जी का महाकाव्य है। इसमे भारतीय, समाज, व धर्म दर्शन के लिये आधार है।

② विनय पत्रिका :- भक्ति भावना से परिपूर्ण

BSEMP

योग

B S E M P

विनय पत्रिका भक्तो के गले का हार है।
इसके अतिरिक्त
दोहावली, गीतावली, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, तरवै रामायण आदि।

भावपक्ष :- तुलसीदास भगवान श्री राम के अनन्य भक्त है वे कहते थे कि जिन्हे राम व वैदेही प्रिय नही है वे घरवाले भी त्यागने के योग्य है तुलसी राम को अपना आराध्य मानते थे। तथा तुलसी रस सिद्ध कवि थे। इनके काव्य मे सभी रसो का परिपाक हुआ है मुलतः शान्त रस मुख्य है।

कलापक्ष :- तुलसी दास ने ब्रज तथा अवधी भाषा मे रचना की है इसके अलावा राजस्थानी, बुंदेलखण्डी, अरबी, फारसी के शब्द भी आ गये है तथा तुलसीदास ने अपने पूर्व की सभी कवियो द्वारा प्रयोग की गयी शैलियो को अपनाया है तथा उन्होने सभी छन्दो का बड़ा ही सहज वर्णन किया है तथा तुलसी दास भी प्राचीन समय के मुख्य कवि थे।

BSEMP

साहित्य मे स्थान :- आधुनिक व प्राचीन काल के कविओ मे तुलसीदास का महत्व पूर्ण स्थान है। वे एक साथ युगदृष्टा, उपदेशक, समाज सुधारक थे। तथा वे भगवान राम के भक्त थे। तथा वह हिन्दी साहित्य को प्रारम्भ करने वाले कवि थे। तथा वे हिन्दी साहित्य मे सदैव स्मरण किए जायेंगे।

प्र016 की उत्तर

(क) ----------- जाय

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक भारती के सामाजिक समरसता।

प्र016 का उत्तर

(ख) मान्य ----------- जाए।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक भारती के नीतिधारा के नीति अष्टक शीर्षक से लिया गया है। इसके रचयिता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंद्यांश मे कवि ने परहित भाव

(18) [ ] + [ ] = [

योग पृ० पृ० ... पृ० ... क व

BSEMP

परोपकार के बारे मे वर्णन किया है।

व्याख्या :- भारतेन्दु जी कहते है कि सम्मान के योग्य वही व्यक्ति नही होते है जो केवल ऊँचा पद प्राप्त करते है। बल्कि सम्मान के योग्य वह व्यक्ति होते है जो केवल दूसरो की भलाई करते है अर्थात जो परोपकार करते है उन लोगो को समाज मे सम्मान मिलता है केवल ऊँचा पद पाने से व्यक्ति सम्मान के योग्य नही होता अतः व्यक्ति को परोपकार करना चाहिए।

प्र०17 का उत्तर

मनुष्य - - - - - - - - - भाई ही था।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत गंद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक भारती के "बैल की ~~बिक्री~~ बिक्री" नामक कहानी से लिया गया है इसके लेखक सियारामशरण गुप्त है।

प्रसंग :- प्रस्तुत गंद्यांश मे कवि ने बैल को बेचकर शिबू के मन मे आने वाले विचारो का वर्णन किया

पृष्ठ के अंक।

BSEMP

व्याख्या :- जब शिबु बैल को बेचकर वापस आता है तो उसके मन मे कई प्रकार के विचार उठते है तथा इसमे वह सोचता मनुष्य बहुत अज्ञानी है जो अपने स्वयं को नही समझता है। तथा उसके ज्यादा किसी और विषय मे नही जानता होगा यह बात जब वह लौटकर आ रहा था। तो उसे बार-2 बैल का चेहरा याद आ रहा था। उसके चेहरे को देखकर जब वह बैल जा रहा था तो बैल के चेहरे पर भी उदासीनता आ गयी थी। उसकी आँखो से आँसु बहने लगे थे तथा वह बैल की बात को अपने मस्तिष्क से हटाता तो उसे अपने पिता की सूरत याद आ जाती। तथा उसके लिए बैल और पिता एक ही चित्र के दो अलग-अलग रूप दिख रहे थे। तथा यह चित्र एक-के बाद एक लगातार उसके विचार मे आता रहता। तथा वह सोचने लगा कि वह अपने स्नेहशील पिता को पहचान नही सका। तथा उसे अब लगने लगा कि बैल उसका दूसरा ही भाई है। वे दोनो एक ही पिता के वात्सल्य

मे पले थे। जिससे उसे बहुत दु:ख हुआ बैल के बेचे जाने का।

प्र० 18 का उत्तर

(क) 'क्षमा गुण का महत्व' उपर्युक्त गंद्यांश का शीर्षक है।

(ख) — गंद्यांश मे क्षमा का वर्णन किया गया है इसे पृथ्वी व वीरो के प्रमुख गुण व भूषण बताया गया है तथा मनुष्यो से गलतियाँ होती है लेकिन क्षमा से सब कुछ शान्त व मधुर हो जाता है तथा क्षमा न होने पर क्रोध, हिंसा आदि गुण पैदा हो जाते है तथा इससे फिर व्यक्ति का विनाश हो जाता है। तथा माता-पिता सभी क्षमाशील होते है अतः हमे इन गुणो को प्रारम्भ से ही ग्रहण करना चाहिए। तथा कई बार मनुष्य के क्षमा के अवसर मिलते है व्यक्ति के लिये क्षमा बहुत जरूरी है तथा यह मानव जीवन के लिये बहुत आवश्यक है तथा क्षमा से देश मे सहनशीलता का विचार पैदा होगा।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(ग) क्षमा के अभाव मे क्रोध, हिंसा, संघर्ष का साम्राज्य हो जायेगा।

प्र0 19 का उत्तर

शाला छोड़ने का प्रमाण पत्र

सेवा मे,
श्री मान प्राचार्य महोदय जी
शा, उ. उ. माध्यमिक विद्यालय नौगाँव
छतरपुर (म.प्र.)

विषय :- शाला छोड़ने का प्रमाण पत्र हेतु आवेदन

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं पिछली वर्ष कक्षा 10 वीं मे पढता था। मैं आपका स्कूल का नियमित्र छात्र था। मैंने अपनी दसवीं का परीक्षा प्रथम स्थान मे आकर प्राप्त की। मैं अब 11 वी मे प्रवेश लेना चाहता है। इस लिए श्री मान जी से अनुरोध है कि वह हमारा शाला - छोड़ने का प्रमाण पत्र की कृपा करें। तो आपकी अतिकृपा होगी।

BSEMP

धन्यवाद,

दिनाँक :- 05/03/09

आपका आज्ञाकारी
शिष्य
नाम - 9
कक्षा - दशवी

प्र० 20 का उत्तर

अनुशासित छात्र जीवन

विशेष :- (1) प्रस्तावना (2) अनुशासन का महत्व (3) अनुशासन और विद्यार्थी (4) अनुशासन और शिक्षा (5) अनुशासन से लाभ (6) अनुशासन हीनता से हानियाँ (7) उपसंहार

(1) प्रस्तावना :- अनुशासन शब्द एक प्रमुख शब्द है। जिसकी जीवन मे बहुत आवश्यकता होती है। अनुशासन से व्यक्ति को बहुत लाभ होता है। अनुशासन के कारण प्रकृति बँधी हुयी है। हमें अनुशासन की शिक्षा प्रकृति से ग्रहण करनी चाहिए। जिस प्रकार सूर्य, चन्द्रमा प्रकृति मे अनुशासन से ...

जिस प्रकार अनुशासन से दिन, रात होते है। अगर यह अपना संतुलन बिगाड़ देगे। तो प्रकृति का संतुलन बिगड़ जायेगा और हमे विविध प्रकार की समास्याओ का सामना करना पड़ेगा। तथा मौसम भी प्रकृति मे बंध मे बँधकर नियमानुसार बदलते रहते है यदि मौसम अनुशासन का पालन न करे तो हमे बहुत सी हानियाँ उठानी पड़ सकती इसलिए हमे भी इसी प्रकार अपने जीवन को सुखद बनाने के लिये अनुशासन का पालन करना होगा तथा अपने अनुशासन का पालन करते हुये हमे प्रकृति से छेड़खानी नही करनी चाहिए। नही तो इसके प्रवाह खतरनाक हो सकते है। इसलिए व्यक्ति को अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र विकास के प्रत्येक अध्याय मे अनुशासन का पालन करना चाहिए।

(2) अनुशासन का महत्व:- अनुशासन जीवन के लिये बहुत ही आवश्यक है। अनुशासन के कारण ही हम विभिन्न प्रकार के खतरो, हानियो व दुर्घटनाओ से बच सकते है। तथा अनुशासन से ही हमारे जीवन का महत्व है। इसके

BSEMP

पृष्ठ के अंको का योग

बिना हमारा जीवन बेकार है तथा अनुशासन का महत्व विकास के प्रत्येक आयाम मे भी तथा अनुशासन से ही हमारे देश के शक्तिबोध व सौन्दर्यबोध को सहायता मिलती है इससे देश का विकास होता है तथा हमारा देश विश्व मे अग्रणी देश बन सकता है परन्तु आवश्यकता अनुशासन के होती है अनुशासन के अभाव मे भ्रष्टाचार जैसी कई समास्याये हमारा देश के लिए हानि का कारण बनती है जिससे देश के शक्तिबोध तथा सौन्दर्यबोध को हानि पहुचती है लेकिन घर पर, सड़क पर, कार्यालय पर अनुशासन का पालन नही करते है तथा वह कूड़ा-करकट व छिलका केले के सड़क पर फेंक देता है जिससे देश के सौन्दर्यबोध को हानि पहुँचती है

(3) अनुशासन और विद्यार्थी :- अनुशासन की विद्यार्थी जीवन मे बहुत आवश्यकता है तथा जो विद्यार्थी अनुशासन का पालन करते है वे अपने व अपने स्कूल का नाम रोशन करते है तथा अनुशासन का पालन करते हुये छात्र को सही समय पर जाना चाहिये

BSEMP

के अंकों का योग

2009

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षक के लिये

होलोग्राम के निशान से मिलाकर लगायें

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक केन्द्र क्रमांक- 221035
6. परीक्षा का नाम हाई स्कूल परीक्षा
7. विषय हिन्दी 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 05/03/09

पृष्ठ

तथा नियमित रूप से विद्यालय की साफ-सफाई पर ध्यान रखना चाहिए। तथा विद्यालय मे शोर भी नही करना चाहिए तथा नियमित रूप से अध्ययन करना चाहिए।

(५) अनुशासन व शिक्षा :- शिक्षा मे भी अनुशासन पर ज्यादा जोर देना चाहिए। तथा शिक्षको को ज्यादा से ज्यादा बच्चो को अनुशासन के लिये जागरूक करना चाहिए। तथा बच्चो को नियमित अनुशासन सिखाया जाना चाहिए। तथा सरकार द्वारा भी शिक्षा मे अनुशासन सम्बंधी बात पर जोर देने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। तथा हर सम्भव शिक्षा की तकनीक व अनुशासन के आधार पर विकास करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(2)

पृष्ठ 2 के कु... कुल अंक

हीनता

(5) अनुशासन से हानियाँ :- अनुशासन हीनता से हम ~~अतः~~ हमे बहुत सी हानियाँ होती हैं तथा अनुशासन के अभाव मे भ्रष्टाचार जैसी आधुनिक बुराइयाँ समाज मे व्याप्त होती है जो देश के विकास को अवरुद्ध करती है। तथा अनुशासन का हमे यातायात के क्षेत्र मे भी पालन करना चाहिए। जिससे हमारे किसी प्रकार से दुर्घटना न हो सके। हमे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र तथा विकास के प्रत्येक आयाम मे अनुशासन का पालन करना चाहिए जिससे कि हमारे देश के शान्तिबोध की हानि न पहुँचे व सौन्दर्य बोध भी प्रदूषित न हो।

(6) उपसंहार :- इस प्रकार अनुशासित जीवन से हमारा नाम प्रसिद्ध हो जाता है। छात्र जीवन ~~@~~ सबसे प्रथम चरण होता है ~~श~~ इसमे अगर हमे अनुशासन का पालन करते है तो हमारा जीवन बहुत सफल होता है क्योंकि यह जीवन सम्पूर्ण जीवन का आधार होता है।

3

प्र० 9 का उत्तर

(क) उपन्यास — उपन्यास कार

1) प्रेमचन्द — गोदान

2) किशोरीलाल गोस्वामी — लालवती

(ख) एकांकी — एकांकीकार

1) हरिकृष्ण प्रेमी —

2) सेठ गोविन्ददास — सत्याग्रही

E

M

P

पृष्ठ के अंकों का योग

4

+ =

पृष्ठ 4 के अंक

कुल अंक

मध्यप्रदेश

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग